शिव भगवानुवाच्य। यह तो बच्चे समझ गए हैं कि शिव भगवान है। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा (स)कता। तो बाप ऐसे बैठ समझाते हैं जो कोई भी पत्थर बुद्धि, अजामिल जैसे पापात्मा भी अच्छी रीत समझ (जा)ते हैं। पहले2 तो बाप समझाते हैं मुझ अपने परमपिता प॰ शिव को याद करो। बच्चे कहते हैं ना— हम तुम्हारे फूल हैं। तुम माली हो, खिवैया हो, वरदाता हो। आप आए हो वर देने। आयुष्वान भव, धनवान भव, ...वान भव। बच्चे पूछते हैं— बाबा, हमारी आयु कितनी बड़ी होगी? इस जन्म की आयु तो कोई से भी पूछ सकते हैं। जन्म पत्री बताने वाले बहुत बैठे हैं। तुम बच्चों को बाप कहते हैं आयुष्वान भव। ... तुम भविष्य की जन्म पत्री पूछते हो। मनुष्य तो इस जन्म की पूछते हैं; क्योंकि फिकर रहता है मौत .... वहाँ तो फिक्र की बात नहीं। सतयुग में थोड़े ही कोई आयु पूछेंगे वा हाथ आदि दिखलावेंगे; क्योंकि वहाँ अकाले मृत्यु होता नहीं। वहाँ जन्म पत्री पूछने, हाथ दिखलाने की दरकार ही नहीं। समझते हैं शरीर पुराना .... फिर नया ले लेंगे। तो अभी परमपिता प॰ बैठ समझाते हैं, अपना भविष्य ऐसा बनाओ जो सदा सुखी र(हो)। श्रीमत पर न चलेंगे तो इतना पद नहीं पाए सकेंगे। (मेरी) मत माना मेरे डायरैक्शन, वो न मानेंगे तो ..... पद भ्रष्ट, निन्दक बनेंगे। चिट्ठी में कोई ने समाचार लिखा था कि कहते हैं हमारा एक गुरु है, कहते या तो मेरे पास आओ या तो दूसरे पास। गुरु का निन्दक ठौर न पाए। एक गुरु करना चाहिए; परंतु ऐसा कोई यहाँ है नहीं। शान्ति, गति—सदगति किसको कहा जाता वो भी नहीं जानते। अब तुम कहते हो— बाबा, ... बादशाह हो। अब बादशाहों का बादशाह तो कृष्ण था, जो ही फिर ल॰ना॰ बन राज्य किया। बाबा तो बादशाहों का बादशाह नहीं ... है। वो बनाने वाला है। वो ही बैठ सारा राज़ समझाते हैं। पहले2 तो अपन परिचय (दे)ते हैं— मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम गाते भी हो कि वो सत, चेतन है, ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। यहाँ तो ..... किसकी कर न (सकते)। सूक्ष्मवतनवासी ब्र॰वि॰शं॰ के लिए भी नहीं कहेंगे। बाबा है सबसे ऊँच ते ऊँच .....प॰..... सभी का बाप कहते हैं। मेरा कोई बाप होता नहीं। अगर मेरा बाप होता तो मनुष्य सभी उनको याद करते। परमपिता प॰ के ऊपर कोई है नहीं। उनको रचने वाला कोई नहीं। सन्यासी फिर कहते हैं— ब्रह्म तत्व से शिव निकला है। उन्हों को पता ही नहीं तो धुका(तुक्का) लगाते रहते हैं। अब ऊँच ते ऊँच शिवबाबा, उनकी हिस्ट्री—जाग्राफी भी जानना चाहिए। उनका जन्म कभी(कब) हुआ? भारत में शिव का (सो)मनाथ का, कालेश्वर का मंदिर है और जयन्ती भी मनाई जाती है; परन्तु वो कब आए थे। कोई भी ....ान सकेंगे। वो परमपिता प॰ शिव ही नॉलेजफुल, ज्ञान का सागर है। वो तो निराकार है फिर ज्ञान ..... सुनावेंगे! अच्छा, वो बाप भी है। आनन्द का, सुख का, शान्ति का सागर भी है तो वो वर्सा कैसे देंगे? (खु)द समझाते हैं— मुझे ज्ञान का सागर क्यों कहते हैं। मैं मनुष्य सृष्टि का चेतन बीज हूँ। बीज रचयिता में ज... ....ना का ही ज्ञान होगा। वो बैठ अपना परिचय देते हैं— मेरी रचना पहले2 सूक्ष्मवतन की है। मैं कल्प2 संगम ..... आता हूँ। अभी आया हुआ हूँ तभी तुम बच्चों को परिचय देता हूँ। तुम अभी शिव के मंदिर में जाओ तो (बु)द्धि में परिचय है कि बाबा आज से 5000 बरस पहले एक ही बार आया था अब फिर आया हुआ है। दुनिया (बि)ल्कुल नहीं जानते कि शिवबाबा कब आए। तुम झट कह सकते हो— शिवबाबा 5000 बरस पहले आया था। अ... ऊँच शिवबाबा हुआ, जिसका आलीशान मंदिर भी है। वो आया था, कर्तव्य करके गया है। मंदिर तो बाद में भक्तिमार्ग में बनाए हैं। आधाकल्प भक्ति ज़रूर होनी है। तब फिर भगवान को आना पड़ता है। आकर दान (अ)र्थात् स्वर्ग की स्थापना करते हैं। अच्छा, उसके बाद फिर ब्र०वि०शं० तीनों देवताओं का चित्र कट्ठा दिखलाते हैं। (उ)नको त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं। तो शिवबाबा पहले2 ब्र॰वि॰शं॰ को आकर रचते हैं। पहले2 ज़रूर ब्र॰वि॰शं॰ को (र)चना पड़े। तो ब्र॰वि॰शं॰ को भी 5000 बरस हुए। अच्छा, उसके बाद फिर ऊँच ते ऊँच ठहरी जगदम्बा, जगत (मा)ता। ल॰ना॰ को जगतपिता—जगदम्बा नहीं कहेंगे। जगदम्बा—जगतपिता से ही सृष्टि रची जाती है। बरोबर

....ने ब्रह्मा को रचा तो सरस्वती को भी रचना पड़े, जिन दोनों द्वारा ही वर्सा दे; क्योंकि बाप समझाते हैं ज्ञान का सागर तो मैं हूँ। यह तो ज्ञान का सागर नहीं है। इनका शरीर ही पतित है। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। ....ब में बहुत जन्म लिए हैं देवी–देवता धर्म वालों ने। फिर कम होते जाते हैं। जो2 पहले आवेंगे, बहुत जन्मों में भी वो ही आवेंगे। 5000 बरस हुआ शिव को, ब्र॰वि॰शं॰ को भी और जगदम्बा–जगतपिता को। जगतपिता अर्थात् प्रजापिता। सो तो यहाँ ही चाहिए। सूक्ष्मवतन में तो प्रजा की रचना नहीं होती है। प्रजापिता ब्रह्मा और ब्रह्मा की बेटी सरस्वती जगदम्बा भी यहाँ चाहिए। तुम कहेंगे, जगदम्बा को 5000 बरस हुए। क्या आकर किया, वो भी समझा सकते हो। बोलो, तुम महिमा गाते हो– तुम मात–पिता हम बालक तेरे..... तो ज़रूर उन(से) बहुत सुख मिले हैं तब तो उन्हों के मंदिर बने हैं। नीचे देखो राज्य योग की तपस्या में बैठे हैं। ऊपर में वैकुण्ठ के मालिक। बिल्कुल क्लीयर है। राज्य योग की तपस्या कर ऐसे ल॰ना॰ (ब)नते हैं। परमपिता प॰ आकर ब्राह्मण धर्म, देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म की रचना रचयिते(रचते) हैं। ब्राह्मण .....चा, वो ही फिर सूर्यवंशी–चंद्रवंशी बनते हैं। एक ही गीता है जि(स)से परमपिता प॰ आकर स्वर्ग ... की स्थापना करते हैं। पहले2 ज़रूर ब्राह्मण चाहिए। यज्ञ रचयिते(रचते) हैं, वो भी ब्राह्मणों को रखते हैं। शूद्र को नहीं ..... यह ज्ञान यज्ञ रचयिते(रचते) हैं तो शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। वहाँ तो ब्राह्मणों को बुलाते हैं। यहाँ ब्राह्मण .... कलम लगता है। कलम तो ज़रूर कोई दूसरे धर्म से लगेगा। क्राइस्ट ने जिसमें प्रवेश किया वो .... क्रिश्चियन नहीं था। उसमें प्रवेश किया फिर उनसे जो निकले वो क्रिश्चियन ठहरे। तो अभी इस पुरानी (दु)निया का जब विनाश हो तभी तो देवी–देवताओं का राज्य स्थापन होगा ना। अभी तो अनेक धर्म हैं, सतयुग में एक धर्म था। अभी यह अनेक धर्म खलास हो, फिर एक धर्म स्थापन होता है। तुम ..... आगे भी महाभारत लड़ाई लगी थी जिसमें अनेक धर्म खलास ..... झाड़ लगा तो और झाड़ ज़रूर विनाश होने चाहिए। शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। कित(नी) सहज बात है। सहज उनके लिए है जो रुचि से पढ़ते हैं। रुचि से न पढ़ते तो फिर नापास हो पड़ते। समझते, कल्प2 नहीं पढ़ेंगे। बाप कहते हैं– मैं तुम्हारा बेहद का बाप, टीचर, गुरु हूँ। ज्ञान का सागर हूँ। तुमको ज्ञान देता हूँ। शिक्षा भी देता हूँ। तुमको त्रिकालदर्शी बनाता हूँ। सदगति के लिए है ज्ञान। ईश्वर का ज्ञान बाबा खुद परिचय देते हैं। बाकी वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्राफी कैसे फिरती है, इसकी नॉलेज देते हैं जिसको ...लिंग कहा जाता है। गुरु का काम है सदगति देना। वो तो कोई दे न सकते। पतित–पावन एक गाया हुआ है। ..... सद्गुरु बिगर घोर अंधियारा। इसलिए बाप भी कहते हैं, इन कलियुगी गुरुओं को छोड़ो। वो तो खुद (ही) पतित हैं। खुद रचयिता, जो प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा है, वह भी पतित बैठे हैं। इनका बहुत जन्मों के (अ)न्त का जन्म है। तो रचयिता ही पतित हैं तो रचना फिर पावन कैसे हो सकती! प॰ जिसका शरीर .....ते हैं वो पतित है। उस सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को तो पतित नहीं कहेंगे। बुद्धिवान इन बातों को अच्छी (री)त समझ जावेंगे। जगदम्बा देवी की इतनी पूजा होती है; क्योंकि वो पतित से पावन बनी है। ..... थी तुम मात–पिता..... तो ज़रूर सुख दिया है। वर्सा तो तुमको मिलता है शिवबाबा से। भक्तिमार्ग में यह ..... तो चलता .... आता हूँ। अभी महिमा तो गाते हैं; परन्तु माता–पिता किसको कहना चाहिए? जगदम्बा की बाजू में पिता तो है नहीं। कोई को पता नहीं है। जगदम्बा और फिर जगतपिता आदि(दे)व। यहाँ आदि देव और आदि देवी का यादगार है। जगतमाता–जगतपिता। ऐसे माता–पिता से (प)द भी ऊँच मिलता होगा ना। यह भी कितना गुप्त है। बाप कहते हैं, ज्ञान का सागर तो मैं ही हूँ। (वर्सा) मिल(ता) ही है डाडे से। इस... माँ–बाप का तो ज्ञान में डेवाला(दिवाला) था। वो परमपिता प॰ इन द्वारा तुमको धन देते (हैं) तो पहले ज़रूर इनके(को) देंगे। इनमें प्रवेश होकर देते हैं और मम्मा पर कलश रखते हैं। तो वो भी